बिहार सरकार
<u>ग्रामीण विकास विभाग</u>

पत्रांक 179872 आ०वि०01/ग्रा०को० 2013 दिनांक 06/03/14

प्रेषक,

**मिहिर कुमार सिंह,**
आयुक्त मनरेगा ।

सेवा में,

सभी जिला पदाधिकारी -सह- जिला कार्यक्रम समन्वयक,
बिहार ।

विषय:- **मनरेगा योजनान्तर्गत सूख चुकी नदियों का पुनरूद्धार ।**

महाशय,

जिला पदाधिकारी, फतेहपुर द्वारा पिछले वर्ष उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले में सूख कर बेकार हो गई 46 कि0मी0 लम्बी सासुर खदेनी नदी का पुनरूद्धार मनरेगा योजना के अंतर्गत किया गया है, जिसे राष्ट्रीय स्तर पर मनरेगा योजना में सराहा गया है । फतेहपुर में किए गए कार्य का प्रतिवेदन अवलोकनार्थ संलग्न है ।

बिहार में भी नदियों में गाद भर जाना (Siltation) एक प्रमुख समस्या है जिसके कारण नदियॉ मृत प्राय: हो जाती है । उदाहरण के तौर पर ऐसा जिर्णोधार कार्य प0 चम्पारण जिले में बेतिया शहर के बीचों-बीच बह रही नदी में अथवा किशनगंज में रमजान नदी में यह कार्य कराया जा सकता है ।

कृपया इस प्रकार की अच्छी दर्शनीय योजनाऍ जिलें में पर लेने पर विचार किया जा सकता है ।

अनुलग्नक:-यथोपरि ।

विश्वासभाजन

(मिहिर कुमार सिंह)
आयुक्त मनरेगा

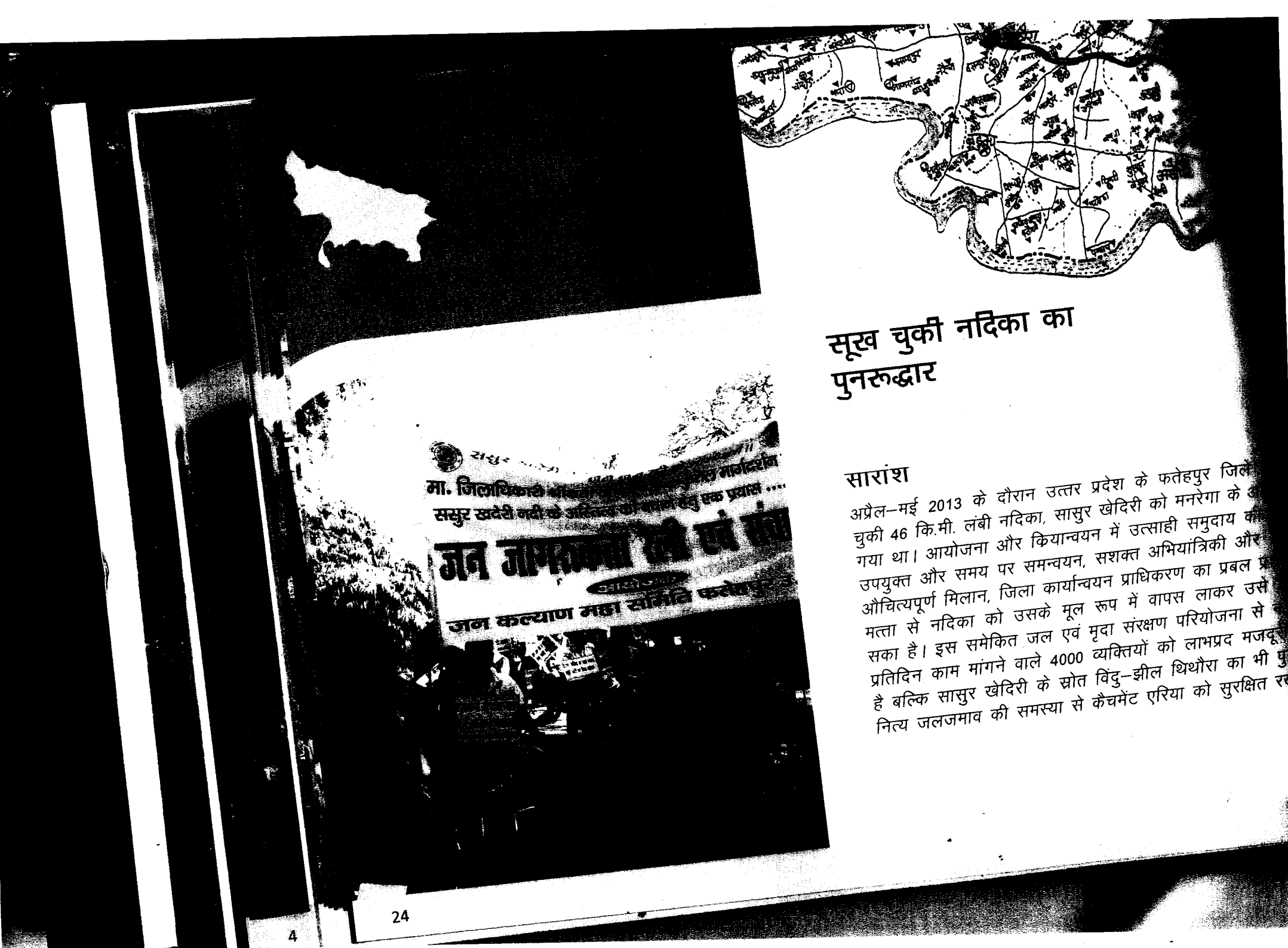


# सूख चुकी नदिका का पुनरूद्धार

## सारांश

अप्रैल–मई 2013 के दौरान उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले
चुकी 46 कि.मी. लंबी नदिका, सासुर खेदिरी को मनरेगा के
गया था। आयोजना और कियान्वयन में उत्साही समुदाय की
उपयुक्त और समय पर समन्वयन, सशक्त अभियांत्रिकी और
औचित्यपूर्ण मिलान, जिला कार्यान्वयन प्राधिकरण का प्रबल प्र
मत्ता से नदिका को उसके मूल रूप में वापस लाकर उसे
सका है। इस समेकित जल एवं मृदा संरक्षण परियोजना से
प्रतिदिन काम मांगने वाले 4000 व्यक्तियों को लाभप्रद मजदू
है बल्कि सासुर खेदिरी के स्रोत विंदु–झील थिथौरा का भी पु
नित्य जलजमाव की समस्या से कैचमेंट एरिया को सुरक्षित रख

## चुनौती

फतेहपुर जिला उत्तर प्रदेश राज्य की राजधानी–लखनऊ से लगभग 150 कि.मी. दूर पश्चिम में अवस्थित है। यद्यपि यह जिला गंगा और यमुना के बीच के दोआब क्षेत्र में स्थित है, फिर भी जिले के वासियों को जल की गंभीर कमी का सामना करना पड़ता है। मानव समुदाय की अत्यधिक पहलकदमी, अतिक्रमण और प्राकृतिक निकास प्रणाली में लगातार गाद जमा होने की वजह से सतही जल के स्रोत सूखने लगे थे। जिले में इस प्रकार सूख चुकी दो नदी जल निकासी प्रणालियां थी–सासुर खेदिरी और सासुर खेदिरी ये दोनों अलग–अलग छोटी नदियां हैं किंतु उनके नाम और समस्याएं एक जैसी हैं। निकासी प्रणाली, जलमार्ग के कैचमेट एरिया का उपचार करने और इनमें से एक नदिका–सासुर खेदिरी के उद्गम विंदु–झील थिथौरा से बड़े पैमाने पर गाद निकालने की तत्काल आवश्यकता महसूस की गई थी। इस आवश्यकता ने इस नदिका के लिए समेकित जल एवं मृदा संरक्षण की अवधारणा को उत्पन्न किया। इस परियोजना की दो मुख्य चुनौतियां थीं–नदी के जलमार्ग का पता लगाना और इस परियोजना के लिए प्रस्तावित कियाकलापों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए समुदाय के विश्वास को जीतना।

## पहल की जरूरत

वर्ष 2012–13 में प्रकाशित रिमोट सेंसिंग रिपोर्ट का पालन करते हुए, जिले के विशेषज्ञों ने जल के संकट पर विस्तार से किए गए विश्लेषण का सहारा लिया। जिले के छः सामुदायिक विकास ब्लॉकों (सीओबी) में स्थिति संकटपूर्ण पाई गई थी और सात अन्य ब्लॉकों में स्थिति थोड़ी कम संकटपूर्ण थी। समस्याग्रस्त क्षेत्रों के निर्धारण के पश्चात जिला प्राधिकारियों ने इन चारों सामुदायिक विकास ब्लॉकों में समेकित मृदा एवं जल संरक्षण परियोजना के पहले चरण की योजना बनाने और कियान्वित करने का निर्णय लिया। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य सासुर खेदिरी नदिका को पुनर्जीवित करना था।

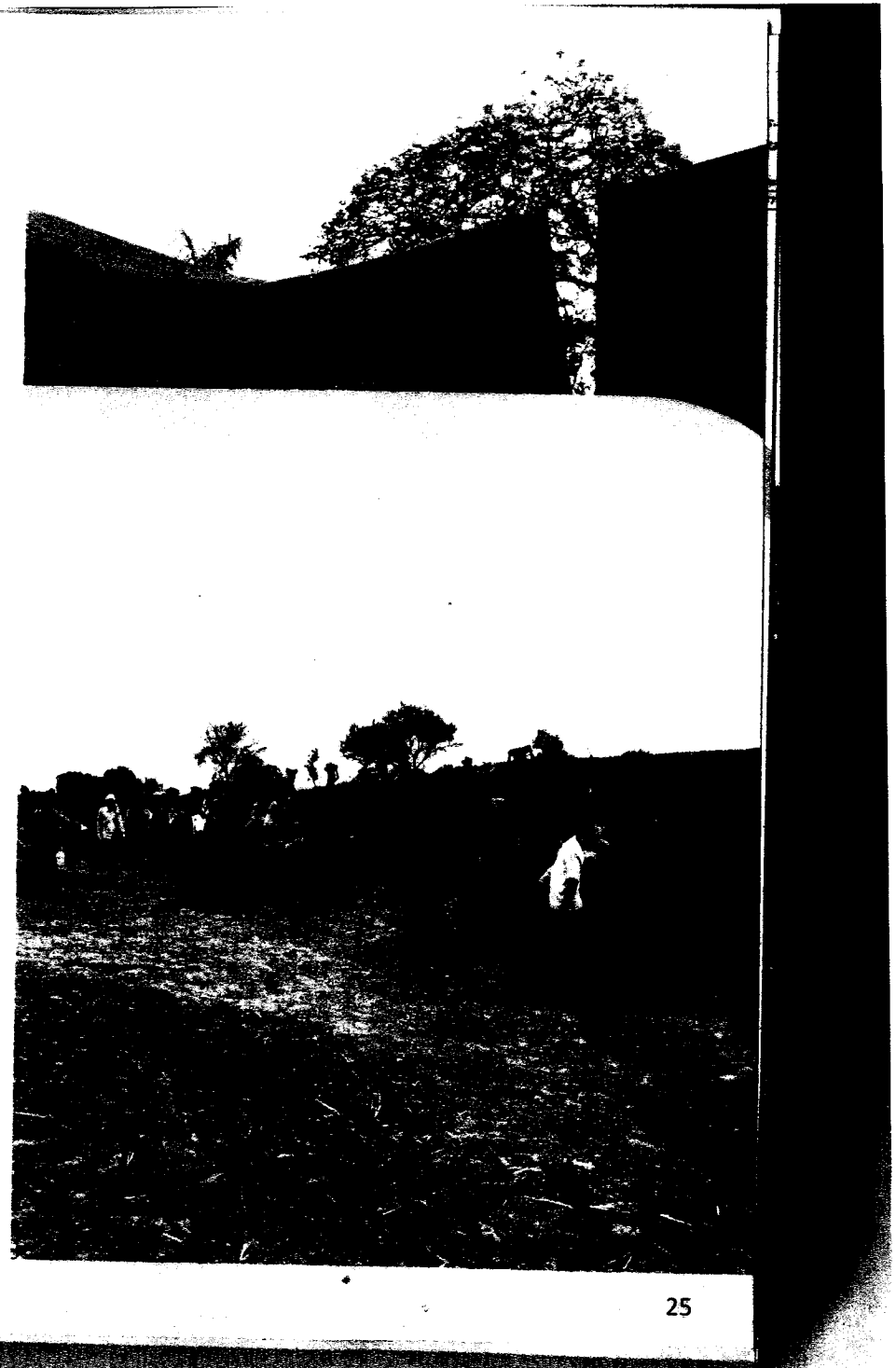

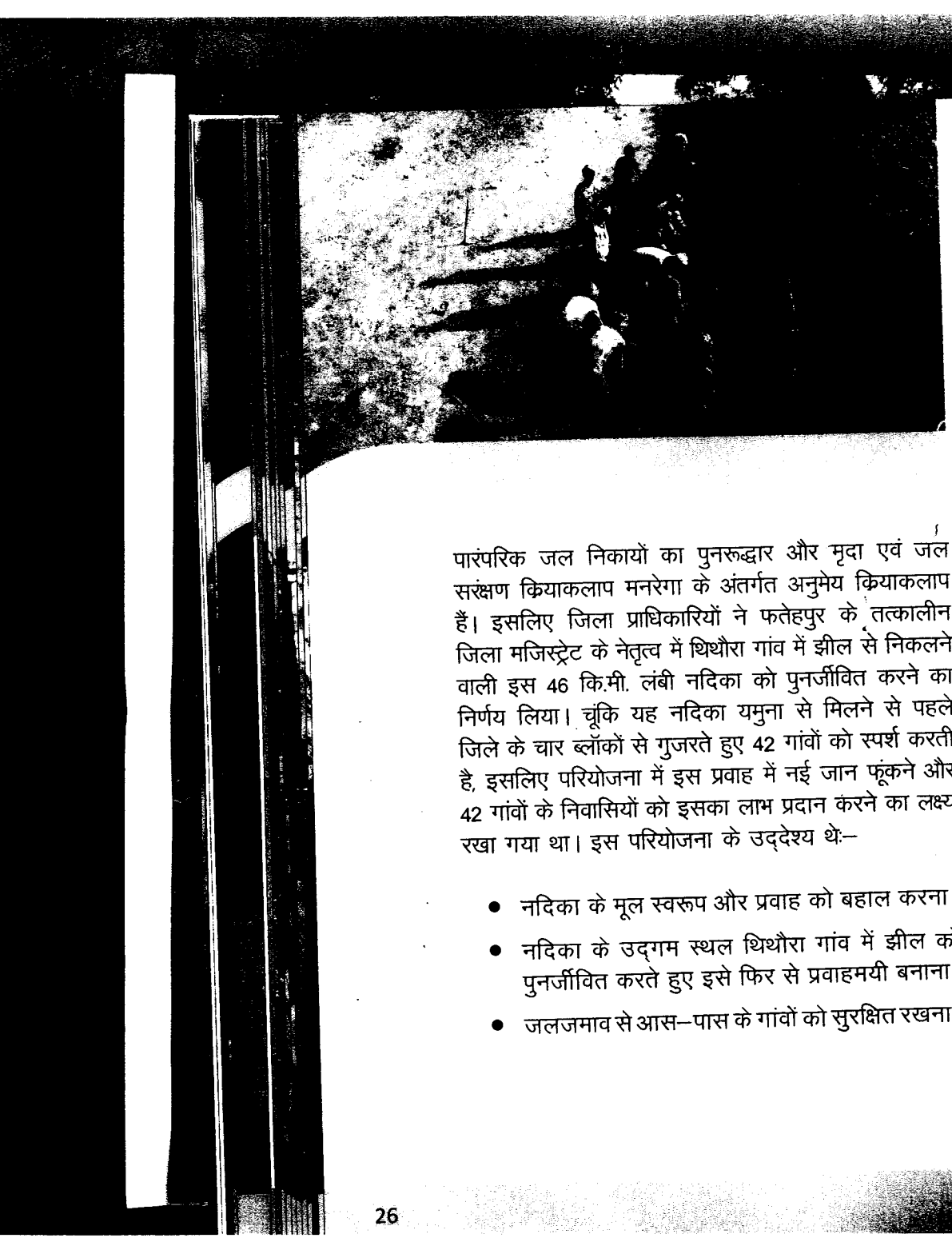

पारंपरिक जल निकायों का पुनरूद्धार और मृदा एवं जल सरंक्षण क्रियाकलाप मनरेगा के अंतर्गत अनुमेय क्रियाकलाप हैं। इसलिए जिला प्राधिकारियों ने फतेहपुर के तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में थिथौरा गांव में झील से निकलने वाली इस 46 कि.मी. लंबी नदिका को पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया। चूंकि यह नदिका यमुना से मिलने से पहले जिले के चार ब्लॉकों से गुजरते हुए 42 गांवों को स्पर्श करती है, इसलिए परियोजना में इस प्रवाह में नई जान फूंकने और 42 गांवों के निवासियों को इसका लाभ प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया था। इस परियोजना के उद्देश्य थे:–

- नदिका के मूल स्वरूप और प्रवाह को बहाल करना।
- नदिका के उद्गम स्थल थिथौरा गांव में झील को पुनर्जीवित करते हुए इसे फिर से प्रवाहमयी बनाना।
- जलजमाव से आस–पास के गांवों को सुरक्षित रखना।
- झील से गाद निकालना और गेट युक्त रोक बांध बनाकर जल को रोक रखना।
- स्रोत झील और नदी के आसपास पेड़ लगाना ताकि फिर से गाद जमा की प्रक्रिया को रोका जा सके।

## पहल

सिंचाई विभाग के लोअर गंगा कैनाल डिवीजन ने मनरेगा के अंतर्गत समेकित परि तैयार की थी। राजस्व, सिंचाई, सामाजिक वानिकी, ग्रामीण विकास और पंचायती राज के वरिष्ठ अधिकारियों वाली अंतर–विभागीय विशेषज्ञ समिति में इस परियोजना के ह पर चर्चा की गई थी। परियोजना के पहले चरण के क्रियान्वयन के लिए तैयार योजना आकलनों के अनुसार, नदिका सासुर खेदिरी को पुनर्जीवित करने के लिए के श्रम और सामग्री अनुपात के आधार पर 12.08 करोड़ रू. का उपयोग किया ज झील क्षेत्र के 7.377 हेक्टेयर और नदिका के 38 कि.मी. जलमार्ग को पुनर्जीवित कार्य नियत किया गया था। यद्यपि शुरूआती योजना नदी की पूरी लंबाई के साथ का उपचार करने की थी फिर भी अंतर–विभागीय समिति ने सुनियोजित कार्रवा की। समिति ने नदिका की एक तिहाई चौड़ाई, जो कि अलग–अलग जगहों से 38 मीटर के बीच थी, पर कार्य करने के लिए योजना में बदलाव करने का नि नदिका के मार्ग को साफ करने और नदिका को अपने जलमार्ग में बहते देने का गया था। पहले दौर की बारिश के पश्चात सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक समीक्षाएं भी ताकि उन स्थानों का पता लगाया जा सके जिन्हें और गहरा तथा चौड़ा करने की

परियोजना के अंतर्गत क्रियाकलाप मिशन मोड में क्रियावित किए गए थे। सभी समुदाय स्तर पर गहन बैठकें और चर्चाएं की गई थीं। प्रधान से आग्रह किया उन अकुशल श्रमिकों को प्रेरित करते हुए इस मिशन को सहायता प्रदान करें पर आ सकते हैं। ब्लॉक विकास अधिकारियों ने नदी के आस–पास के प्रत्येक

स्तरीय बैठकों का आयोजन किया ताकि समुदाय को इस मिशन के लाभों के बारे में बताया जा सके। शुष्क नदिका को पुनर्जीवित करने के इस कार्य के पीछे छिपे उद्देश्य का प्रभावी ढंग से प्रचार–प्रसार करने के लिए कॉलेज के प्रिंसिपलों, उद्योगपतियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, मीडिया के साथ बैठकें आयोजित की गई थीं।

प्रति कि.मी. 20 से.मी. के प्राकृतिक अनुपात के साथ 500 मीटर क्रॉस सेक्शन के हिसाब से कार्य की मात्रा का अनुमान लगाया गया था। नदिका संबंधी कार्य को एक–एक कि.मी. के हिसाब से छोटे–छोटे कार्यों में बांटा गया था और एक–एक कार्य सचिव, रोजगार सेवक और तकनीकी सहायक को आवंटित किया गया था। प्रत्येक एक कि.मी. की दूरी पर कार्यस्थल सुविधाएं अर्थात पेयजल, क्रेच, शेड इत्यादि सुनिश्चित की गई। नदिका के जलमार्ग पर कार्य के दौरान लगभग 1,86,400 घन मीटर मिट्टी की खुदाई की गई। इस क्रियाकलाप से सफलता पूर्वक 96,900 श्रमदिवसों का सृजन हुआ। इसके अलावा, थिथौरा स्रोत झील से लगभग 78,200 घन मीटर कीचड़ निकाला गया और 38,000 श्रमदिवसों का सृजन हुआ।

## निष्कर्ष और परिणाम

इस समेकित परियोजना में संकटपूर्ण स्थिति को बेहतर बनाने और वातावरण में बदलाव से जुड़ी समस्याओं से निपटने के लिए मनरेगा कार्यों के जरिए प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन करने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया था। इस नदिका को पुनर्जीवित करने से न केवल 134900 श्रमदिवसों का सृजन हुआ बल्कि संपूर्ण जलमार्ग के वैज्ञानिक उपचार के जरिए इस नदिका को भी सफलतापूर्वक प्रवाहमयी बनाया जा सका। इस कार्यकलाप से जल एक्विफर का पुनर्भरण करते हुए कैचमेंट क्षेत्रों में पर्याप्त जल सुनिश्चित हुआ है। लोगों ने पानी में उगने वाली फसलों की खेती शुरू कर दी है, जो कि जल की भारी कमी के कारण पहले नहीं की जाती थी। नदिका के स्रोत झील में जल का संचलन शुरू हो चुका है। 16 जुलाई, 2013 को झील में 90,000 घनमीटर पानी था। एक बिंदु पर, झील से 600 क्यूसेक जल बहने का अनुमान लगाया गया था। आज इस नदिका को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित करने से सासुर

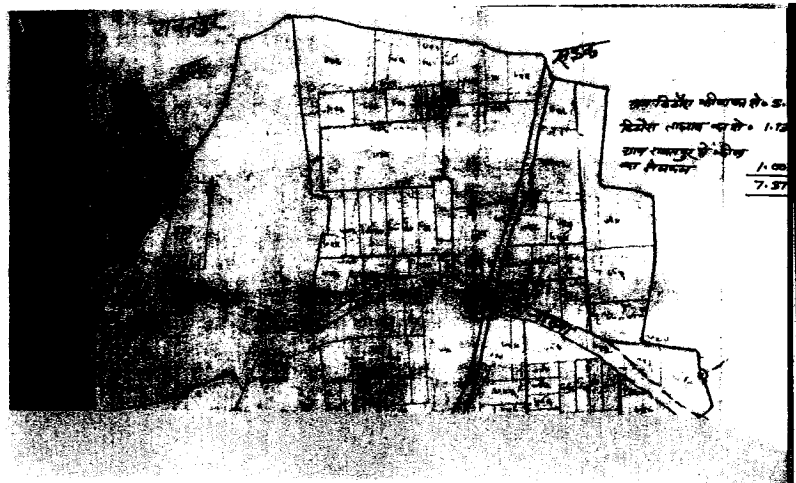

खेदिरी के कैचमेंट क्षेत्रों में रहने वाले ग्रामवासियों के चेहरे पर खुशी लौट आई है क्योंकि अब उनमें मानसून में बाढ़ की वजह से असहाय हो जाने का खतरा नहीं रहा है।

स्रोत:
कंचन वर्मा, जिलाधीश, फतेहपुर, उत्तर प्रदेशय ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा 17 सितम्बर, 2013 को आयोजित तालमेल संबंधी राष्ट्रीय कार्यशाला में की गई प्रस्तुति।